॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे देव! हे सखा! हे मित्र! तू इस सँसाररूपी राष्ट्र का स्वामी है। इस राष्ट्र को शान्तिदायक, महान् और ऊँचा बना। विधाता! यही नहीं, हम सँसाररूपी राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। हम सबसे पूर्व यह चाहते हैं कि जो हमारा हृदयरूपी राष्ट्र है यह हर प्रकार से ऊँचा बना रहे। यह हमारी हृदयरूपी जो अयोध्या है इसमें वह राम विराजमान रहे, जिस रामराज्य के ऊपर सँसार व्याकुल होता चला जा रहा है। हे विधाता! आज हम शरीर में वह अयोध्या चाहते हैं जिसमें रामराज्य हो जाए। हमारी यह अयोध्यारूपी नगरी ऊँचा बन जाए और वह विधाता, इस नगरी में ओत-प्रोत हो जाए। वह विधाता, इस राष्ट्र का स्वामी बन जाए।

हे विधाता! आज हम उस राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। जिस राष्ट्र में हमारा जन्म हो, जो राष्ट्र हमारे शरीर का एक ऊँचा भाग हो। कैसे बनाएँगे, विधाता? जब तक आपकी करूणा नहीं होगी, विधाता! आपकी दी हुई प्रेरणा हमें नहीं मिलेगी। तब तक हम इस सँसार का, अपने शरीर रूपी राष्ट्र का उत्थान किसी भी प्रकार नहीं कर सकते, न ही इसका निर्माण अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

प्रभु! हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, सँसार का कल्याण चाहते हैं। जब सँसार में रहने वाले प्राणियों का हृदय, अयोध्या के तुल्य बन जाएगा। रामराज्य सबके हृदय में रमण कर जाएगा। उस काल में शान्ति का प्रदर्शन हो जाएगा।

विधाता! आज हम भी अपना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम भी अशान्ति में हैं। हमें शान्ति नहीं मिल रही हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 524	कुल पृष्ठ संख्या	समग्र अंक : 599
वर्ष : 44	44	समग्र वर्ष : 50

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. उपाधियों का रहस्य	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि	5-18
4. यज्ञोमयी स्वरूप	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि	19-33
5. ऋषियों के उद्‌गार		34
6. Creation, and the Institution of National Order	Pujyapad-Gurudev	35-38
7. दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गँगा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मंत्री
   ए-59, पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

॥ ओ३म् ॥

उपाधियों का रहस्य

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परमपरागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं। मानो याग ही उसका आयतन माना गया है, वह उसका गृह है। मानो इसलिए वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है क्योंकि ये जो सँसार रूपी यज्ञशाला है प्रत्येक मानव उस यज्ञशाला के निकटतम विद्यमान है और अपने सुविचारो की, सु-सकल्पों की बेटा! वह अपने में आहुति दे रहा है अथवा वो याग कर रहा है। मेरी प्यारी माता भी याग कर रही है क्योंकि प्रत्येक आभा में एक याग का प्रदर्शन ही दृष्टिपात आता रहता है। क्योंकि हमारा वेद मन्त्र परम्परागतों से ही उस मानवीयता का दिग्दर्शन कराता रहता है जहाँ मानव यागों के द्वारा नाना प्रकार के लोकों में गति करता रहता है अथवा उसकी वाणी द्यौ लोक में प्रवेश करती रही है। ऐसा अनुपम मानो वो मानवीय विचार माना गया है जिस चिन्तन को करता हुआ मानव अपने मनुष्यत्व को प्राप्त हो जाता है, वो अपने को ही प्राप्त हो जाता है। तो इसलिए हमारा वो अनुपम विचार इतना भव्य होना चाहिए जो मानो हमें प्राप्त होना है वह प्रायः हमें ही प्राप्त होता हुआ और हम सँसार सागर से पार हो जाएँ। आज मैं कोई विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ।

आज का हमारा प्रत्येक शब्द मानो उस याग के सम्बन्ध में कुछ विवेचना कर रहा है वह जो ब्रह्म विष्णु है जो हमारा कल्याण करने वाला है। वो मानो नाना रूपों में रत्त रहने वाला है, वो सतो में रहने वाला है–सत्यमयी विष्णु। हमारे यहाँ विष्णु नाम यागों का वर्णन आता रहता है, विष्णु याग की विवेचनाएँ होती रहती हैं। हमारे यहाँ नाना प्रकार की उपाधियाँ, नाना प्रकार के रूप एक अपनी आभा में निहित होते रहते हैं। मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे नाना प्रकार की प्रेरणा देते रहते हैं। हमारे यहाँ परम्परागतों में ये नाना प्रकार की उपाधियों से मानव सुसज्जित रहा है। राष्ट्रवाद भी उपाधियों के ऊपर सुसज्जित रहा है। हमारे यहाँ इन्द्र और देखो और भी जैसे ब्रह्मा, विष्णु इत्यादि शिव की चर्चाएँ आती रहती हैं और भी नाना ऋषियों का विचार और उनका क्रिया-कलाप भी हमारे समीप होता रहा है।

शिव

हमारे यहाँ नाना प्रकार की उपाधियों से ये समाज अपने में सुसज्जित रहा है। जैसे एक शिव की उपाधि को प्राप्त करना है तो मानो वो राष्ट्रवाद में और विज्ञान में इतना कुशल होना चाहिए, वह इतना उदासीन होना चाहिए अपनी प्रजा को महानता की वेदी पर ले जाएँ और वह शिव कल्याण करता परमपिता परमात्मा का नामोकरण भी है परन्तु राजा का नाम भी शिव कहलाता है। हमारे यहाँ शिव नाम नाना रूपों में बेटा! शिव सूर्य को भी कहते हैं जो अपने में बेटा! विष को अपने में धारण करता है। मानो पृथ्वी को हमारे यहाँ शक्ति व ऊर्जा रूपों के रूपों में परणित की गई है। मानो वो विष उगलती है तो सूर्य अपने में पान कर लेता है और विज्ञानाम् भविते देवाम् वह विज्ञान देती है तो शिव उसके आरुढ़ हो जाते हैं।

विष्णु

इसी प्रकार विष्णु के पयार्यवाची शब्द–विष्णु वास्तव में माता को कहा जाता है और विष्णु परमात्मा है। विष्णु आत्मा है तो विष्णु सूर्य

है। ये नाना रूपों में एक पर्यायवाची शब्द है परन्तु उपाधियाँ भी बनी हुई हैं। उस राजा का नाम विष्णु कहलाता है जो चतुर्भुज वाला नियमों का पालन करने वाला है और राजा के राष्ट्र में महानता का पदर्शन होता है तो उस राजा का नाम विष्णु कहलाता है। तो विष्णु की उपाधियाँ मानी जाती हैं। जो मानो देखो सत्य को ले करके, रजोगुण, तमोगुण में परणित न होने वाला राजा होता है वो विष्णु, मानो वो विष्णु कहलाता है।

ब्रह्मा

इसलिए हमारे यहाँ–मैं ब्रह्म उपाधि को इससे पूर्व कालों में प्रगट–ब्रह्मा जो उत्पत्ति के मूल में लगा हुआ हो। ब्रह्मा वेद के पठन-पाठन और वेद की प्रतिभा में जो रत्त रहने वाला हो उसका नामोकरण हमारे यहाँ ब्रह्मा कहा जाता है, जो चतुर्भुज कहलाता है। जो मानो चतुर्थमुखी कहलाता है। चतुर्थमुखी का अभिप्राय यह है क्या जो चारो वेदों का अङ्ग उपाङ्गों से जानने वाला हो। जो चारों वेदों को अङ्गों उपाङ्गों से जानने वाला हो उसका नाम ब्रह्मा कहलाता है। मानो देखो विष्णु तो सत्य में ही रहता है और वे उत्पत्ति के नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाला है। वास्तव में ब्रह्मा नाम परमपिता परमात्मा का है जो ब्रह्मः ब्रह्मावाचक प्रहे लोकाम् मानो जो ब्रह्म है वही मानो देखो वेदाअमृत का पान करने वाला है, वह प्रकाश में रत्त कराने वाला है।

वशिष्ठ, शृङ्गी व इन्द्र

इसी प्रकार हमारे यहाँ वशिष्ठ की उपाधियों से ये विज्ञान, ये मानो आध्यात्मिकवाद बेटा! उससे भी सुशोभित रहा है। जैसे हमारे यहाँ पुत्रेष्टि याग और वृष्टि याग में जो महान् पारायण हो वो शृङ्गी की उपाधि को प्रदान, प्राप्त होता रहा है। परन्तु जो ब्रह्मवेत्ता हो, ब्रह्मनिष्ठ हो मानो देखो उसके ऊपर उसका अधिपत्य हो तो वह वशिष्ठ

कहलाता है। तो ये भिन्न-भिन्न प्रकार की जो उपाधियों का वर्णन हमारे यहाँ प्रायः आता रहता है। हमारे यहाँ और भी जैसे विश्वा रूपों में मानो देखो एक उपाधि कही जाती है। जैसे इन्द्र है एक सौ एक अश्वमेध याग करने के पश्चात् वो इन्द्र की उपाधि को प्राप्त उससे वो सुशोभित होता है। परन्तु देखो यहाँ नाना प्रकार की उपाधियों में ये परणित होने वाला समाज, ये परणित होने वाला राष्ट्रवाद अपने में महान् और पवित्रता का दिग्दर्शन करता रहा है। तो इसलिए मैं आज उपाधियों के सम्बन्ध में विशेष चर्चा अपनी देना नहीं चाहता हूँ। मेरे प्यारे! महानन्द जी भी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

अनुष्ठान के स्वरूप

आज का अभिप्राय हमारा क्या है कि ये आयु का जितना भेदन है हमारे अनुष्ठानों की पद्धतियाँ परम्परागतों से ही चला करती हैं। हमारे यहाँ एक काल से नहीं परम्परागतों से ही ऐसा माना गया है पुत्रों! क्या हमारे यहाँ अनुष्ठान की प्रवृत्तियाँ होती चली आईं। जैसे काग्भुषण्ड जी के जीवन में और माता अरुन्धती और वशिष्ठ के जीवन में, माता पार्वती और शिव के जीवन में, ब्रह्मा और मानो देखो सरस्वती के सम्बन्ध में, लक्ष्य में ब्रहे विष्णु और लक्ष्मी के सम्बन्ध में ये मानो देखो अनुष्ठानिक कहलाए गए। हमारे यहाँ ऋषि मुनि भी अनुष्ठान करते रहे हैं। **अनुष्ठान किसे कहा जाता है जो आयु की दीर्घता के लिए अनुष्ठान करते हैं।** बारह-बारह वर्षों तक यागों का चयन करना, साकल्य को एकत्रित करना और उसमें मानो देखो वायु से आहार का सेवन करना या आपो से जल का आहार का समन्वय करना, अपने में धारण करना और इससे मानो देखो उपराम की प्रतिक्रियाओं में निष्ठित हो जाना कि उससे मानव का आयु दीर्घ हो जाता है। जैसा मैने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए महाराजा च्यवन ऋषि के सम्बन्ध में कहा था। महर्षि च्यवन ऋषि के सम्बन्ध में वो प्रायः अनुष्ठन करते रहते थे। मानो देखो लगभग काग्भुषण्ड जी ने निन्यानवें

अनुष्ठान किए और वे अनुष्ठान कैसे होते हैं? याग में आहुति दे रहे हैं मानो देखो आहार मानो शीतली प्राणायाम और खेचरी मुद्रा से वो अपने जीवन के निर्वाह के लिए परमाणुओं को वायुमण्डल से सिंचन करते रहते थे। तो वह जो सिंचन करते तो उसके पश्चात् प्राण का एक-दूसरे में निरोध करना, प्राण का एक-दूसरे में निरोध करते रहते थे। याग करना, प्राणो का निरोध करना और निरोध करके ही मानो देखो उनकी आयु में दीर्घता बलवती हो जाती है। तो ऐसा वाक् वैदिक साहित्य में क्या क्रिया-कलापों में प्रायः दृष्टिपात आता रहा है।

प्राणों के निदान का क्रम

प्राणों के निदान की चर्चाएँ हमने बहुत पुरातन काल में विवेचना की क्या हमारे इस शरीर में दस प्राण हैं। जो आयु को दीर्घता में चाहता है तो मानो देखो सबसे प्रथम वे नाग प्राण से प्रारम्भ होती है इसकी प्रतिक्रिया। नाग प्राण को देवदत्त में मानो समन्वय करता है और देवदत्त को धनञ्जय में तत्पर कर देता है और धनञ्जय को कृकल में और कृकल को कूर्म में। तो मानो ये पाँच प्राण उप कहलाते हैं इनका एक-दूसरे से मिलान हो गया। मानो इसी को ले करके कूर्म को हम समान में और समान को व्यान में और व्यान को अपान में और अपान को प्राण में और प्राण को उदान में मानो उदान में ले जा करके ये दस प्राणों का एक समूह बन गया। एक प्राण के दस भाग हैं ये सृष्टि के मानो देखो रूप में ये प्राण मानो इस ब्रह्माण्ड का सूत्र बना हुआ है। जैसे शरीर का सूत्र है इसी प्रकार अपने में मानो देखो रक्त होना और जीवन की धारा को बलवती बनाना यह हमारा एक नृत बन जाता है।

मैंने पुरातन काल में भी इनकी चर्चाएँ की हैं। आज भी मैं तुम्हें परिचय करा रहा हूँ तो मानो देखो उसका निरोध करना, अनुष्ठान करना तो इस प्रकार के निन्यानवे बारह-बारह वर्ष के अनुष्ठान काग्भुषण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि ने किए। मानो उनका आयु दीर्घ हो गया,

उनका आयु कई सौ वर्षों का बन गया। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में विवेचना नहीं अब मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् शमी वर्णम् ब्रह्मा! गायनत्वाः रथप् प्रजाः।

मेरे पूज्यपाद गुरुवेद! मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव बहुत ऊँचे विज्ञान की चर्चा कर रहे थे, बहुत ऊँचे अनुष्ठान की चर्चा कर रहे थे। जब हम पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान होते तो ये प्रायः हमें इस प्रकार के अनुष्ठान कराते रहे हैं और उन अनुष्ठानों में मानव की जो बुद्धि का जो एक कुञ्ज है मानो जो नृतिका हो रही है इसका वो स्पष्टीकरण हो जाता है। उसका स्पष्टीकरण जहाँ हुआ और बुद्धि के तन्तुओं में सूक्ष्मवाद प्रवेश कर जाता है। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी बड़ी ऊर्ध्वा में वार्ता प्रकट कर रहे थे। परन्तु जहाँ ये हमारी आकाशवाणी जा रही है वहाँ मैं ये अपने में दृष्टिपात कर रहा था एक याग का आयोजन, याग को सम्पन्न किया गया ये भी अनुष्ठान है। ये भी गृह में आनन्द के लिए, सुखद के लिए एक अनुष्ठान है परन्तु मैं, मेरा हृदय सदैव यजमान के साथ रहता है। मैं परम्परागतों से ही उच्चारण करता चला आ रहा हूँ हे यजमान तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे जीवन की धारा पवित्र बन जाए, तेरा जीवन एक अखण्डता में परणित होता हुआ अपने में सुखद को अनुभव करता रहे ऐसा मानो सदैव मेरा एक मन्तव्य रहता है, मेरी एक मानो कामना रहती है। **याग के नाना रूप** वो समय था जब पूज्यपाद गुरुदेव जैसे महापुरुषों को कजली बनो से लाया जाता और कजली बनो से ला करके यज्ञशाला में प्रवेश कराया जाता परन्तु वो समय दूरी चला चला गया। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के सम्बन्ध में तो कोई वाक्य उच्चारण करने वाला नहीं परन्तु केवल ये कि हे यजमान! तेरे गृह का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे गृह में तेरे

द्रव्य का सदैव सुदपयोग होता रहे। जहाँ द्रव्य का सदुपयोग होता है वो माता है वो माता बन करके मानव के समीप आती है परन्तु वो श्री बन करके समीप आती है। इसलिए याग हमारे यहाँ एक मानो देखो अनुष्ठान ही नहीं है ये नाना रूपों में इसका चलन वैदिक साहित्य में रहा है। समाज में क्रियात्मक रहा है। परन्तु मध्यकालीन कुछ ऐसा ही काल हुआ जिस काल में यागों की अपभ्रन्शता हो गई। यागों को न जान करके देखो ये समाज नाना प्रकार की रूढ़ियों में परणित हो गया, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गईं। परन्तु याग किन्हीं ना किन्हीं रूपों में ये समाज में रहा है। महाभारत काल के पश्चात् याग को केवल ये ही स्वीकार कर लिया कि बाल्य का जन्म हुआ तो याग कर लो इसका शुद्धिकरण हो जाएगा। गृह का शुद्धिकरण होना एक यागों की प्रथा परम्परा मानी गयी।

परन्तु महाभारत काल के पश्चात् एक मार्ग हुआ, एक सम्प्रदाय हुआ जिसका नाम मानो जिसका नामोकरण वाम मार्ग के नाम से परणित हुआ। वह मांस को भक्षण करने वाला समाज वह सुरा और सुन्दरी में अपना विश्वसनीय बन गया। परन्तु याग को वह मुख्य स्वीकार करते हुए याग में मानो देखो मांसो की आहुति देना गौ मेध याग में गौ की आहुति, अजामेध में बकरी की आहुति, अश्वमेध याग में घोड़े की आहुति, परन्तु इसी प्रकार देखो नरमेध में नर की आहुति। भिन्न-भिन्न प्रकार के मांसो का चलन हुआ परन्तु देखों ये नहीं विचारा कि तुम ये क्या कर रहे हो। जब मुझे वो काल, उनका क्रिया-कलाप स्मरण आता है तो हृदय दुखित होता है और आधुनिक काल में वर्तमान में भी वो पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं-कहीं प्राप्त हो जाता है।

दो वेदियों का चलन

देखो, जब मैं ये विचारता हूँ क्या ये समाज क्या बन गया है। वाम मार्ग ने ये विचारा क्या अग्नि में मांसों की आहुति तो दो। दो

वेदी बनाने का चलन हुआ। वाम मार्ग काल से ही दो वेदियों का चलन हुआ। एक वेदी में याग हो रहा है अग्न्याधान एक वेदी में देवताओं का पूजन हो रहा है और देवताओं का पूजन मानो देखो वह देवपूजा तो याग सर्वत्र याग ही देव-पूजा मानी गई है परन्तु उसमें देखो द्रव्य का आह्वान करना और उसमें देवताओं से मानो द्रव्य को अर्पित करना मानो देखो उसको पाण्डित्व बुद्धिमान न रह करके अपने उदर तक अपने को याग को और देव-पूजा को स्वीकार कर लिया परन्तु देखो ये कितना एक मानव समाज के लिए अज्ञानता का एक प्रदर्शन हुआ। परन्तु देखो वह एक वेदी की दो वेदी इसलिए क्या ये अहिंसा में हैं और ये हिंसा में हैं। हिंसा में देखो अग्न्याधान में आहुति देना, पशु बलि देना परन्तु देखो एक वेदी ऐसी जो देवताओं का पूजन होता। अरे! भोले प्राणियों देवताओं का पूजन तो ये सर्वत्र है।

परमपिता परमात्मा द्वारा यागों का पुनःउत्थान

देखो, इस प्रकार का चलन जब हुआ तो ये समय-समय पर आ करके वो यज्ञस्वरूप वह जो परमपिता परमात्मा हैं वो अपनी सत्ता अपनी ऊर्ज्वा के द्वारा मानो देखो महापुरुषों को जन्म दिलाते रहते हैं वो महापुरुष आ-आ करके अपना चलन कर जाते हैं अपनी क्रियाओं में रत्त हो जाते हैं। मानो देखो यागों का पुनः से उत्थान हो जाता है। पुनः से यागों का जन्म हो जाता है उस जन्म की प्रतिभा ये कि प्रत्येक गृह में वह चलन देखो पूर्व काल से ही पुरातन काल से ही मानो वो चला आ रहा है।

वाम मार्ग से रूढ़ियों का निकास

मध्य काल में उसकी प्रतिक्रियाएँ अपभ्रन्श हो गयीं। परिणाम ये कि मेरे वाक्यों को उच्चारण करने का अभिप्राय ये है—मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने कई काल में ये परिचय कराया आज भी मैं ये परिचय करा रहा हूँ क्या ये समाज मानो देखो किस प्रकार का मध्यकाल में

बना। महाभारत काल के पश्चात् राष्ट्रीय पद्धति और देखो रूढ़िवाद उन्हीं वाक्यों को वाममार्ग से रूढ़ियों का निकास हो गया। एक रूढ़ि तो बौद्ध के काल, बौद्ध के रूप में परणित हो गयी, एक रूढ़ि महावीर के रूप में प्रगट हो गयी और मानो देखो उसके पश्चात् और नाना प्रकार की अज्ञानता में रूढ़ि पनपती गयी और जो रूढ़ि बनी वही राष्ट्र के लिए मानो घातक बन गयी। राष्ट्र के लिए वो ही रूढ़ि घातक बनी तो इसलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वाक् कहता रहता हूँ क्या रूढ़ि नहीं होनी चाहिए। यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो रूढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिए ये रूढ़ि राष्ट्र के लिए घातक बन करके रहती हैं। मानो धर्म के नामों पर रूढ़ि हैं। धर्म एकोकी वचन है और धर्म के नामों पर रूढ़ि हैं केवल देखो वो राष्ट्रवाद को नष्ट करने के लिए और मानव के जीवन को अस्त-व्यस्त करने के लिए। इसलिए मैंने बहुत पुरातन काल में ये कहा है कि ये रूढ़ियाँ समाप्त होनी चाहिएँ।

ये धर्म के नामों पर जो रूढ़ियाँ–एक ही धर्म है उसको स्वीकार करो और मानो देखो उसको अपने में शास्त्रार्थ से, शास्त्रीय दृष्टि से उसको अपने में ग्रहण करने का प्रयास करो। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैंने कई काल में वर्णन कराया क्या ये समाज बहुत दूरी चला गया है धर्म से परन्तु जब मैं रूढ़िवाद की चर्चा करता हूँ, तो मानो उसमें मानव कृतियों में परणित हो जाता है। एक वेदी की दो वेदियों का निर्माण होना ये एक मानो देखो अहिंसा और देखो हिंसा में परणित हुई, वाम मार्ग में ये क्रिया-कलाप किया।

देव-पूजा

इससे पूर्व काल में जब याग ही इस सँसार में देव-पूजा कहलाती जैसे एक समय प्रातःकाल में माता अरुन्धती याग कर रही थी तो महर्षि श्वेतकेतु वहाँ पहुँचे। तो श्वेतकेतु ने कहा मातेश्वरी क्या कर

रही हो? उन्होंने कहा देव-पूजा कर रही हूँ। ब्रह्मचारियों के समीप देव-पूजा हो रही है। विद्यालयों में प्रातःकालीन जब अग्न्याधान होता है तो आचार्य ब्रह्मचारी मिलन करके देव-पूजा कर रहे हैं, देवताओं को प्रसन्न कर रहे हैं क्योंकि देवता बाह्य जगत आन्तरिक जगत में ये देवताओं का ही गृह माना गया है। उस गृह को पवित्र बना रहे हैं जहाँ देवता हमारी रक्षा करें। मानो देखो इसी प्रकार ये देवपूजा के रूप में ये अनुष्ठान कहलाता है ये **देवानु अनुष्ठान** कहलाता है।

सँकल्पोमयी विद्या

सँकल्प हमारे यहाँ बड़ा विचित्र रहा है। समाज में बहुत विद्याएँ समाप्त और लुप्त हो गयी हैं जिन विद्याओं का हमें प्रतीत–आधुनिक काल के वर्तमान के प्राणी को प्रतीत भी नहीं है कि कितनी विद्याएँ थीं। हमारे यहाँ सकल्पोंमयी एक विद्या थी, सँकल्प से आयु को भी आयु का भी बँटवारा किया जाता है। आयु को भी मानो विभाजन किया जाता है। आयु को हम एक-दूसरे में आयु हम एक-दूसरे को प्रदान करते रहे हैं। वो विद्याएँ, वो सँकल्प हमारे हृदयों में हमारे मानो देखो तपों में रहा है। वो तपों में रह करके तप क्रिया में अपने में लाने का ऋषियों ने प्रयास किया।

पवित्र राजा का काल

मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने निर्णय कराया–पूज्यपाद गुरुदेव मानो मेरे वाक् को स्वीकार भी करते रहे हैं क्या आधुनिक जो वर्तमान का काल है ये बड़ा विचित्र चल रहा है। परन्तु महाभारत काल के पश्चात् ये अज्ञान आया, ये अज्ञान नष्ट होना चाहिए। **अज्ञान जब नष्ट होता है जब महापुरुष होते हैं, बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं।** मानो देखो वहाँ सुन्दरता वहाँ आती है जिस काल में राजा ये विचारता है कि मेरा राष्ट्र धर्म के मर्म को जानने वाला हो, मेरे राष्ट्र में दार्शनिक होने चाहिएँ, मेरे राष्ट्र में योगी होने चाहिएँ और

मेरे राष्ट्र में देखो राष्ट्र का निर्माण करने वाले महापुरुष होने चाहिएँ। जिस राजा के राष्ट्र में मैंने कई काल में वर्णन कराया जिस राजा के जिस काल में मानो देखो एक बुद्धिमान और एक मानो बुद्धिहीन दोनों का एक ही मानो देखो समानता में राष्ट्र अपने में राष्ट्र को गति देना चाहता है वो गति आ नहीं पाती वो गति छिन्न-भिन्न हो जाती है। मानो देखो यहाँ बुद्धिमानों से राष्ट्र का मानो राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए और देखो वशिष्ठ का निर्माण होना चाहिए। जब यहाँ मानो देखो अरे! हे भोले मानव देखो मूर्खों की चुनौती देने वाला राजा तो मानो मूर्ख ही होगा वो कदापि बुद्धिमान नहीं हो सकता क्योंकि बुद्धिमानों का चुनौती दिया हुआ तपोमय जो राजा होता है वो राष्ट्र को सम्पन्न बनाता है। वो राष्ट्र को प्राण देता है जैसे सशक्त भूमि है तो जब मानो देखो उसे अमृत का पान करा देता है और वह जल अपने में अपनी ऊर्ज्वा को दे-करके किसी को महान् बना देता है। इसी प्रकार जो राजा पवित्र होता है, सुचरित्र होता है, महान् होता है, निर्भय होता है उसे मानो किसी का भय नहीं होता वो परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में अपने को स्वीकार करता है तो वो राजा राष्ट्र के लिए सुखद और राष्ट्र के लिए आनन्द की वृष्टि करा सकता है।

मैंने बहुत पुरातन काल में कहा कि ये रूढ़ियाँ समाप्त–यहाँ कहीं मौहम्मद के मानने वाले हैं, कहीं ईसा के मानने वाले हैं और भी नाना देखो यहाँ रूढ़ियाँ पनप रही हैं वो रूढ़ियाँ मानों देखो वैदिकता के आगे अहा! वेद की आभा में आ जानी चाहिए। वो रूढ़ियाँ; अज्ञान समाप्त होना चाहिए और वह रूढ़ि जब तक जीवित रहेगीं मानो देखो राष्ट्र के हृदय में शान्ति की ही स्थापना नहीं हो सकती। वो राष्ट्र अपने में अधूरेपन में परणित रहा है। आज से नहीं सदियाँ समाप्त हो गई हैं, बहुत-सा काल समाप्त हो गया इसी नृत को, ये नृत ही होता रहा है परन्तु मैं विशेष चर्चा देना नहीं चाहता हूँ।

ऋषियों का नृत्य और प्रेरणा

मैं केवल अपने पूज्यपाद गुरुदेव को अपना यह वक्तव्य क्या अपने विचार जो मेरे हृदय में, मेरे हृदय में जो पनपते रहते हैं उन विचारों को मैं उद्‌गार और उद्‌गीत गाता रहता हूँ। मेरा स्वभाव बन गया है। मेरा स्वभाव ही नहीं बना सत्य उच्चारण करने का मेरा नृत बन गया है। परन्तु देखो विचार क्या है क्या राष्ट्र को ऊँचा बनाना, यागों का चलन करना। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का ये भोला-भाला अम्रतो ब्रह्म वाचा शरीराम् अप्रती लोकाम् वशिस्तोऽम् यागो वर्णीस्तोस्जदम् वह यागों में श्रद्धा का एक सँस्कारों का तारतम्य चला आ रहा है और वो तारतम्य अपने में देखो अद्‌भुत है, अनुपम है, अद्वितीय है उसके ऊपर मैं कोई टिप्पणी नहीं कर सकता।

परन्तु विचार विनिमय ये है कि प्रत्येक मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना और यागों का चलन करना। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कहीं मानो विष्णु की व्याख्या, कहीं ब्रह्म की व्याख्या, कहीं शिव की व्याख्या करते रहते हैं। आधुनिक काल के जगत् में इनको भी नाना रूपों में परणित करना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु जो जिस प्रकार जैसा है उसको ज्ञान और विवेक से उसी प्रकार दृष्टिपात करना ये ज्ञान की कुञ्जी कहलाती है। परन्तु मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कोई विशेष चर्चा आज प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार ये देने के लिए कि याग होने चाहिएँ, देव-पूजा होनी चाहिए। हे यजमान्! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मेरे हृदय की ये कामना है मैं सदैव अपने हृदय से ये उद्‌गार देता रहता हूँ कि तेरे जीवन की मानो सुविचार, सुद्रव्य, सुआभा में रत्त होता हुआ तू मानो इस सागर से पार होने का प्रयास कर। ये आज का हमारा विचार अब समाप्त होने जा रहा है।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये है कि आज का विचार केवल मुझे ये देना है क्या ये रूढ़ियाँ समाप्त होनी चाहिएँ। हे

राजन! हे राजा तू अपने राष्ट्र से रूढ़ियों को समाप्त कर, मानवता का प्रसार हो, मानवीय विचारों की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। ये विचार और प्रत्येक गृह में याग होने चाहिएँ जिससे राष्ट्र में सुगन्धि हो जाए, राष्ट्र सुगन्धित बन करके मानो देखो राष्ट्र एक महान् बन करके शिव-राज बन जाए वही इन्द्रराज बन करके, वह विष्णु राष्ट्र बन करके और राष्ट्रीयता का प्रसार होना चाहिए। ये मेरा विचार मानो सदैव बना रहता है और रूढ़ियों में रूढ़ियाँ मानो देखो अग्नि में परणित हो जानी चाहिएँ और एकोकी धर्म जो मानवीय धर्म है जो अन्तरात्मा का अन्तरात्मा से जो भावना देता है। जो वेद का मन्त्र कहता है उसको ले करके मानव अपनी वैदिकता के ऊपर देखो अपना वक्तव्य देना राष्ट्र उनके ऊपर अपने जीवन को क्रिया-कलाप में लाना ये उस राष्ट्र का कर्त्तव्य हैं। मानो देखो मैं अपना अपनी विशेष चर्चाएँ देने नहीं आया हूँ। ये बड़ा सौभाग्य का एक विषय है क्या यजमान का गृह और द्रव्य मानो देखो उसका सदुपयोग होना यह मैं अपने में मानो हर्ष ध्वनि करता रहता हूँ हे यजमान तेरे जीवन का सौभाग्य, अखण्डता सदैव बनी रहे। अब मानो देखो इन वाक्यों को मैं अपना विराम दे रहा हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने संक्षिप्त परिचय दिया है। अब शेष चर्चाएँ मानो समय-समय पर आती रहेगीं। अब मैं आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे! ऋषिवर महानन्द जी ने अपने विचार प्रगट किए। इनके विचारों में एक दाह है, इनके विचारों में एक विडम्बनामयी है। ये विडम्बित रहते हैं राष्ट्र के लिए, समाज के लिए। मानो इनका हृदय कितना उद्गारता में परणित हो रहा है। **आज हमारा ये वाक् क्या कह रहा है** कि हम नाना रूपों में अपने जीवन को लाने का प्रयास करें। **हम जितना तप करेंगे उतना हमारे यहाँ उपाधियों का जन्म होगा। हमारे उन तपों से उपाधि बनती हैं** नामों से उपाधि नहीं

बनती, नमोकरण नहीं कहलाता। परन्तु आज का विचार ये कि महानन्द जी ने यजमान को अपनी शुभकामना प्रगट कीं हम भी अपनी शुभकामना प्रगट करें–हे यजमान तेरे जीवन की धारा पवित्र बनी रहे। ये आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। शेष चर्चाएँ उपाधियों के सम्बन्ध में इससे पूर्वकाल में प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन-पाठन।

ओ३म् देवम् आभ्यामृऋषि माम्ग्रीवा वाचन्नाः गतऊ मानाः।
ओ३म् शनिगायाः मामृऋषि ग्राहण्त्वाः।
ओ३म् यजानम् ब्रह्मा यापाप्रमरथाः वायु गताः।
ओ३म् सर्वम् भद्रा माम् ब्रह्माः।
अच्छा भगवन्!
आनन्द मङ्गल।

दिनाँक : 12 मार्च, 1985
समय : प्रातः 11 बजे
स्थान : मोदीनगर, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

यज्ञोमयी स्वरूप

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा हमारा वरणीय माना गया है। वही परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। यह ब्रह्माण्ड उसका आयतन माना गया है, प्रत्येक वस्तु उसकी आयतन है वह उसमें वास कर रहा है तो इसीलिए हमारे आचार्यों ने इनके ऊपर गम्भीर चिन्तन मनन करने के पश्चात् उस परमपिता परमात्मा का यज्ञोमयी स्वरूप माना है क्योंकि यह सँसार एक प्रकार का यज्ञोमयी है और यह उसका आयतन माना गया है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप कहते हैं जहाँ वह यज्ञोमयी स्वरूप है वहाँ मुनिवरो! वह विज्ञानमयी भी है। विज्ञानवेत्ताओं ने ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ी हैं और उड़ते रहते हैं परन्तु वह जो **परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है उसी को प्रत्येक मानव उद्‌बुद्ध करता रहा है।** उसी को परीक्षण रूपों में अपने में धारण करता रहा है। कोई सँसार में नवीनता नहीं आती, नवीनता उन वस्तुओं की आती है जो कदापि नहीं होतीं, परन्तु जो सर्वत्र है, जो सर्वत्रकाल में रहते हैं तो उसमें न्यूनता और वृद्धपन का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वह तो सदैव एक रस रहने वाला ज्ञान है, एक रस रहने वाला विज्ञान है, एक रस रहने वाली चेतना है। जिस चेतना के ऊपर मानव परम्परागतों

से ही अनुसन्धान और अनुष्ठान करता रहा है। वैज्ञानिकजन उसी गति को अणु-रूप में दृष्टिपात करते हुए उनका मिलान करते रहते हैं।

आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता

जब आध्यात्मिक वैज्ञानिकों के समीप जाते हैं तो वह यह विचारते हैं, सँसार में किसी वस्तु का विनाश नहीं होता तो जब विनाश नहीं होता, रूपान्तर है तो अन्धकार भी नहीं रहना चाहिए। तो अन्धकार के लिए प्रत्येक मानव अपने में महानता चाहता रहता है। ऊँची-ऊँची उड़ान उड़ने वाला अपने में महान् सार्थक और विचारणीय अपनी वस्तु को लाने का प्रयास करता है। परन्तु उस परमपिता परमात्मा को जहाँ विज्ञानमयी स्वरूप कहा आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं ने इसके ऊपर बहुत सी टिप्पणियाँ कीं। आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने में महान् अपने में विचित्र बनना चाहता है। प्रत्येक मानव की यही आकांक्षा होती है क्योंकि मैं यज्ञोमयी अपने जीवन को बनाता चला जाऊँ। मुनिवरो! भौतिक विज्ञानवेत्ता ने भी परम्परागतों से ही इस महान् रहस्यतम गम्भीर रहस्यों में अपने को ले जाने का प्रयास किया और उन्होंने यह विचारा है कि हम वास्तव में अपने जीवन को एक महान् यज्ञोमयी बनाना चाहते हैं।

अग्नि का आह्वान

मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। केवल कुछ परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है? मेरे प्यारे महानन्द जी की कुछ प्रेरणा होती रहती है उन प्रेरणाओं का स्रोत क्या है? ''यजनम् ब्रह्मे वार्चो वृतता अस्वम् ब्रह्मे वाचो वरणस्तम् विश्वो वृते वाचौसन्दम्'' वेद का मन्त्र कहता है **हे यज्ञोमयी बनने वाले मानव! तू अपनी मानवीयता को अपनी आभा में ले जा** जैसे हमारे यहाँ पुरातन काल में एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज याग कर रहे थे तब अग्नि का चिन्तन करते हुए, अग्नि को प्रदीप्त करते हुए, अग्नि का चयन करते हुए और अग्नि से कहते थे कि हे अग्नि! तू मेरे हृदय में प्रकाश दे। वह अग्नि के लिए

बेटा! आदान कर रहा है अथवा उसका आह्वान कर रहा है और कह रहा है, हे अग्नि! आ, तू मेरे हृदय में प्रकाश दे, तेज दे जिससे मेरा जीवन प्रकाशित हो जाए और मैं सँसार में याज्ञिक बन करके, यजमान बन करके मैं अपनी वाणी को, अपनी उद्गार हृदय की तरङ्गों को तेरे में समर्पित करके मैं द्यौ-लोक तक पहुँचना चाहता हूँ। मैं द्यौ-लोक में अपने को ले जाना चाहता हूँ। हे अग्नि! तू आ।

उद्गम

द्यौ-मण्डल से सूर्य प्रकाश लेता है। वेद का मन्त्र कहता है ''उद्गम वतो वासम् उदगौ वस्तति देवः'' **यह जो उद्गम है यह द्यौ है** इस द्यौ मण्डल से सूर्य सहायता ले करके इस सँसार का उद्गाता है। इस पृथ्वी मण्डल का उद्गाता बन करके उद्भोग कर रहा है, प्रकाश दे रहा है। ऐसा अनुपम प्रकाश आ रहा है जिस प्रकाश को पा करके वनस्पति अपने जीवन को पान करने लगती है। माता के गर्भस्थल में जो शिशु होता है वह उसके प्रकाश में प्रकाशित होकर के तेज को प्राप्त कर रहा है। जो नाना प्रकार की खनिज हैं जो पृथ्वी के गर्भ में पनप रही हैं। अभी रेतक रूपों में हैं, उनका उद्घोष हो रहा है **वह अपने में, परमाणु किरणों के साथ में अपने में मिलान कर रही हैं** तो मेरे पुत्रो! यह कैसा प्रभु का कैसा विज्ञान है? जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही अनुसन्धान, कैसा यज्ञोमयी स्वरूप है, कितना **प्रिय याग हो रहा है।** सूर्य उद्गाता बन रहा है। उद्गाता बन करके जीवन प्रदान कर रहा है। नाना प्रकार की वनस्पतियों में एक महान्ता की ज्योति महान्, प्रबल बन करके वह वैज्ञानिकों के लिए सार्थक बन रहा है।

अग्न्याधान

विचार-विनिमय क्या? आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता कहता है। हे अग्नि! आयाहि तू मेरे हृदय में प्रवेश हो, तू मेरे नेत्रों में प्रकाश दे

जिससे मैं तेरे इस दृश्य को, इस अग्नि को अग्न्याधान करता हुआ मैं तेरे परमाणुओं को वैज्ञानिक तथ्यों के द्वारा, यन्त्रों के द्वारा उन परमाणुओं को अपने में दृष्टिपात कर सकूँ। हे यज्ञोमयी, हे अग्नि अग्न्याधान करने वाले तू अग्नि को प्रदीप्त कर। अग्नि कहती है ''अग्नम् ब्रह्मः वाचः'' यह वेद का आचार्य कहता है, यजमान कहता है, हे अग्नि! तू मेरे हृदय में प्रवेश हो। मैं तेरे से प्रकाश को पाता हूँ, मैं इसमें हृदय रूपी जो अग्नि मेरी शान्त हो गई है उस अग्नि को मैं प्रदीप्त करना चाहता हूँ, उस अग्नि को मैं उद्बुद्ध करके उसमें साकल्यों का स्वाहा देना चाहता हूँ। घृत की मैं श्रद्धामयी आहुति देना चाहता हूँ, यह घृतोमयी जो श्रद्धा है उससे मेरा जीवन ऊँचा बनेगा परन्तु मैं उसकी आहुति देना चाहता हूँ। **अग्न्याधान करता हुआ अग्नि की उपासना करता हुआ यजमान कहता है, हे भगवन्! मेरे गृह में प्रकाश रहे किसी प्रकार का अन्धकार न रहे।** मेरे प्यारे! ऐसी उद्गम इच्छा उद्गार हृदयों की वह अग्नि की तरङ्गों को उद्बुद्ध कर देता है। उद्बुद्ध करता हुआ वह जो परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है जो इस सँसार रूपी यज्ञ का रचयिता है इसको सहारता है, वह इस प्रकृति के एक-एक कण-कण में जो विद्यमान है वह यज्ञोमयी है क्योंकि यज्ञ उसका आयतन है, उसकी स्थली बनी हुई है तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम अपने में महान् बनना चाहते हैं।

बाह्यीय-याग

परन्तु आजका हमारा वाक्य यह कह रहा है? मेरे पुत्र ने मुझे प्रेरणा दी है कि याग के सम्बन्ध में कुछ चर्चाएँ की जाएँ तो मैं बेटा! इतना उच्चारण कर सकता हूँ कि इस सँसार में याग तो होने ही चाहिएँ क्योंकि जब यह परमात्मा का भव्य जगत् ही एक प्रकार की यज्ञशाला है यह प्रत्येक मानव एक यज्ञशाला के रूप में कुछ ऐसा याग कर रहा है, कोई मानव हुत कर रहा है, अग्नि को अग्नि के मुख में परणित

स्वरूप जब आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं के द्वारा पहुँचा अथवा भौतिक विज्ञानवेत्ताओं के द्वारा पहुँचा तो बेटा! देखो, अग्नि की तरङ्गों में से उन्होंने अग्नि में अणु और परमाणु, परमाणुओं के निहित कर रहा है। उन परमाणुओं के ऊपर वह अनुसन्धान अपने में परमाणु देना आरम्भ कर दिया है उस परमाणु का विभाजन करने लगे तो विभाजन करते सृष्टि का चक्र, सृष्टि का चित्रण उसमें एक-एक परमाणु में दृष्टिपात आने लगा। उन परमाणुओं का मिलान किया तो यन्त्रों का निर्माण हो गया। यन्त्रित होने लगे। मेरे प्यारे! देखो राष्ट्रीयता में उसकी भव्यता आभ्याद्गति प्राप्त हो गई।

परिणाम, परन्तु देखो! यही विज्ञान मुनिवरो! देखो, आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं के समीप पहुँचा तो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता ने सोचा, विचारा, चिन्तन और मनन करने के पश्चात् क्यों यह सँसार तो बाहरीय जगत् है यह बाहरीय तो यज्ञशाला है परन्तु इस बाहरीय जगत्शाला में नाना प्रकार का एक याग हो रहा है। देखो! कहीं सूर्य प्रातःकालीन ऊषा और कान्ति के द्वारा प्रकाश कर रहा हैं, कहीं चन्द्रमा रेणुका के अन्धकार को लेकर के शान्ति वृष्टि कर रहा है कहीं मेरे प्यारे! देखो यह वायु इस सँसार को प्राण दे रही है, प्राण शक्ति देता, इसका भेदन हो रहा है। यह अग्नि सँसार को तेजोमयी बना रही है तेजोमयी बना करके मुनिवरो! उसके स्वरूप को जाना जा रहा है।

आध्यात्मिक-याग

परन्तु आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता यह विचारता है कि मुझे तो साधक बनना है, मुझे तो सँसार में मुद्रित हो जाना है। **यही प्रश्न भगवान् कृष्ण ने एक समय सन्दीपन ऋषि से किया था।** महाराजा संदीपन ऋषि से यहीं प्रश्न किया था कि महाराज मैं आध्यात्मिक मुद्रित होना चाहता हूँ, आध्यात्मिक मुद्रित मैं कैसे बनूँगा? तो मेरे प्यारे! देखो महाराजा सन्दीपन ऋषि ने इसी वाक्य को ले करके कहा था कि तुम्हें

मुद्रित होना है, मुद्रित होना है तो ''सम्भव ब्रहे वृतः'' तुम प्रत्येक इन्द्रियों को मुद्रित बना लो। मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है भगवान् कृष्ण ने उनके चरणों में ओत-प्रोत हो करके अपने को मुद्रित बनने का प्रयास किया। नेत्रों को मुद्रित किया, श्रोत्रों को मुद्रित किया, त्वचा को मुद्रित किया। सबको मुद्रित करने के पश्चात् इस ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात किया। इस ब्रह्माण्ड के विज्ञान को विज्ञान के तत्वाधान में ले गए, भौतिक विज्ञान जिसे कहते हैं। जहाँ अणुओं और परमाणुओं की तरङ्गों में जाने वाला वैज्ञानिक उड़ान उड़ता हुआ कोई सूर्य में रमण कर रहा है, कोई चन्द्रमा में जा रहा है कोई मङ्गल में जा रहा है, कोई शुक्र और बुद्ध में जा रहा है, कोई नाना रूपों में परिक्रमा कर रहा है, कोई गुरु की परिक्रमा यान कर रहा है, कोई सूर्य की परिक्रमा कर रहा है। कोई स्वाति की परिक्रमा कर रहा है परन्तु देखो **यहाँ परिक्रमा का बहुत महत्त्व माना गया है।** माता अपने पुत्र की परिक्रमा कर रही है और पुत्र अपनी माता की परिक्रमा कर रहा है। पत्नी अपने पति की परिक्रमा कर रही है, पति-पत्नी की परिक्रमा कर रहा है। बेटा! यह कैसा ब्रह्माण्ड है? कैसा परिक्रमा करने वाला यह जगत् है? इन्हीं परिक्रमाओं को जानते-जानते एक विचार दूसरे विचार से उसका समन्वय हो जाता है और **जब विचारों का समन्वय हो गया तो वह मुद्रित होना प्रारम्भ हो जाता है** और वह मुद्रित होता हुआ अपनी आत्मा ब्रह्मवाचः जैसे मानव के शरीर में इन्द्रियाँ प्राणों की परिक्रमा कर रही हैं और प्राण मेरे प्यारे! देखो इन्द्रियों की परिक्रमा कर रहा है। प्राण-अपाण की परिक्रमा कर रहा है, अपाण-व्यान की परिक्रमा कर रहा है, व्यान समान की परिक्रमा कर रहा है और उद्गम ब्रह्मे समान की परिक्रमा करता हुआ बेटा! यह समय रूपी चक्र चल रहा है। मेरे पुत्रो! कैसा अनुपम यह ब्रह्माण्ड है? प्राण-प्राण की परिक्रमा कर रहा है, इन्द्रियों के विषय इन्द्रियों में समाहित हो रहे हैं। मानो, देखो समाहित हो करके एक-दूसरे में एक हो करके बेटा! प्राण सूत्र से चले जाते हैं।

वेद का ऋषि कहता है ''प्राणम् ब्रह्मे कृतम जलप्रभवहे वाचः। वेद के आचार्य संदीपन ने यह कहा था भगवान् कृष्ण को कि हे पुरुषम् मानव ये जो ब्रह्माण्ड ब्रह्मे वाचः है वह प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है। इसका सूत्र ही प्राण है। प्राण सूत्र में देखो इन्द्रियाँ पिरोई हुई हैं। जब प्राण चला जाता है तब इन्द्रियों का अपना अस्तित्व नहीं रह जाता है। यह प्राण सूत्र ही है, जब सुषुप्ति में जाता है तो सब शून्य हो जाता है परन्तु देखो कौन जागरूक रहता है? प्राणम् ब्रह्मे वाचः आत्मा के साथ ही, प्राण ही एक आत्मा के साथ ही, प्राण ही एक आत्मा का सूत्र बना हुआ है। मेरे पुत्रो! ब्रह्माण्ड का भी वही सूत्र है क्योंकि लोक-लोकान्तरों में क्या, परमाणु-परमाणु में क्या, एक गति-गति में वह प्राण अपनी प्रतिक्रिया कर रहा है। तो विचार-विनिमय में देखो बेटा! यदि कोई सँसार का यदि कोई उद्गाता है तो उद्गान गाने वाला यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपना उद्गम गा रहा है। उद्गीत गा रहा है। उद्गीत गाता हुआ उद्गम ब्रह्मे वाचः ब्रह्मः लोकः, वह अपने में समाहित हो रहा है। विचार रहा है कि मैं कहाँ चला गया हूँ? परन्तु देखो महाराजा संदीपन ने यही वाक्य कहते हुए आचार्यों से अपनी महान् से महान् कल्पना का उद्घोष किया है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ वाक्य दूरी न ले जाऊँ, परन्तु **आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता यही कहता है कि मैं आत्मा को जानने का प्रयास कर रहा हूँ।** आत्मा ही हमारा एक नृत्य है, **आत्मा ही प्राण स्वरूप है।** प्राणस्वरूप होने से बेटा! एक-एक आभा को लेकर के शरीर रूपी यज्ञशाला का शोधन कर रहा है। हे याज्ञिक बनने वाले तू अपने में महान् बनता चल, अपने में विचित्र बनता चल। क्योंकि **विचित्र बनना ही सँसार में प्रभु के समीप जाना है।** क्योंकि परमात्मा विचित्र है, परमात्मा अणुवस्तिति कहलाता है, वह इस सँसार में रहता हुआ परन्तु इस सँसार से दूरी रहता है।

लक्ष्य

आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस सँसार-सागर से पार होना चाहते हैं बाहरीय याग, आध्यात्मिक याग से मिलान करता हुआ। **भारद्वाज मुनि जी यह कहते हैं, हमें बाहरीय से आध्यात्मिक याग का समन्वय करना है।** हमें उस बाहरीय याग को वैज्ञानिक तत्वों में ले जाना है परन्तु जिससे हम राष्ट्र और समाज और मानवीयता को महान् बना सकें। बेटा! आजका हमारा वाक्य यह समाप्त होने जा रहा है। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्दों की विवेचना करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे और वह ऐसे शब्दों में हमें ज्ञान की वृष्टि कर रहे थे। किसी काल में जब इनके चरणों में विद्यमान होकर के इस साधना के क्षेत्र में जब प्रवेश हो जाते थे तब अपने यौगिक और साधकों के द्वारा यह नाना प्रकार की क्रियात्मक अपने विशाल अभ्रों को अवगत कराते रहते थे। परन्तु वह समय तो दूरी चला गया है। मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव अभी-अभी यज्ञोमयी स्वरूप की कल्पना कर रहे थे। कल्पना ही नहीं उसका विशुद्ध रूपों से वर्णन कर रहे थे। जहाँ हम यह उच्चारण करते हैं कि **याग जैसा कर्म द्वितीय नहीं हो सकता।** तो यह केवल हमारे हृदय की कल्पना ही नहीं रहती है। यह वेद का मन्त्र तथा ज्ञान और विज्ञान की धारा इसमें मानव को ले जाती है और वह उसमें मुद्रित और धारणा होता हुआ अपने में यह स्वीकार करता है कि वास्तव में यह शुद्ध कार्य करना चाहिए।

द्रव्य का स्वरूप

''द्रव्याम भूतम् ब्रह्मः'', पूज्यपाद-गुरुदेव ने बहुत पुरातन काल में हमें यह निर्णय कराया था कि सँसार में इतना द्रव्य है इसका सदुपयोग होना चाहिए क्योंकि यदि द्रव्य का सदुपयोग नहीं होता तो द्रव्य मानव को मृत्यु के आँगन में ले जाएगा और यदि द्रव्य का सदुपयोग होता रहेगा तो यही द्रव्य मानव को सुखद और स्वर्ग में ले जाता है। क्योंकि सँसार के मूल में यदि हम यह विचारते हैं कि **यह जितना द्रव्य है** यह **परमपिता परमात्मा की सम्पदा है।** सृष्टि का सृजन करने वाले ने सृष्टि के प्रारम्भ में द्रव्य की आभा, **द्रव्य क्या है?**

यह परमाणुओं का एक मिलान है। इसमें विचारों की अनुकृतिका है जब इसमें एक आभा परणित हो जाती है तो इसका रूप द्वितीय रूप में परणित हो जाता है। परिणाम यह है कि उस द्रव्य का सदैव सदुपयोग होना चाहिए।

यागों से याग

आज जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है, मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव के शब्दों को प्रतिपादित किया जा रहा है, मैं भी अपनी आभा वहाँ एक यज्ञों का आयोजन हो रहा है, मेरा हृदय बड़ा प्रसन्न हो रहा था, मैं अपने में सदैव प्रसन्नयुक्त रहने के लिए यागों से याग 'अमृतम् ब्रह्मे वाचः' यह याग अमृत है, यह याग अग्नि है। यह याग मानो, देखो स्वर्ग में ले जाने वाली एक-एक प्रतिभा कृत्य कहलाती है। मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव को प्रेरणा देता रहता हूँ और प्रेरणा दे करके कहा करता हूँ प्रभु! यह सँसार तो एक बड़ी आभा में जा रहा है। मानव में जहाँ अधिकार की पुकार होती जा रही है, कर्त्तव्य की विहीनता होती चली जा रही है। यह काल तो ऐसा विचित्र होता चला जा रहा है परन्तु वहाँ मैं जब यागों जैसे कर्मों को दृष्टिपात करता हूँ तो अन्तरात्मा प्रसन्न हो जाती है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना

रहे, क्योंकि तेरे जीवन में महानता और विचित्रताएँ तथा कर्म करने का क्रियाकलाप में कुशलता आती रहे, मेरी सदैव यह कामना रहती है। **सौभाग्य अखण्ड बना रहने का अभिप्राय क्या जीवन में सदैव प्रसन्नता रहे, आनन्द चित्तता रहनी चाहिए।** मेरी यह कामना रहती है।

परन्तु देखो यज्ञोभव सम्भवः क्योंकि यह याग सृष्टि के प्रारम्भ में सृष्टि के पिता ने इस अणुकरणीयता को निर्धारित किया। क्योंकि मुझे मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव प्रकट कराते रहते थे जब मैं अध्ययन करता था कि ब्रह्मा के अथर्वा नामक दो पुत्र थे, वह याग करते रहते थे और याग करते-करते परमाणुओं पर अनुसन्धान करते-करते वायुमण्डल में अपनी उड़ान उड़ते रहते थे। ऐसा मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव प्रकट कराते रहे हैं परन्तु मैं इस सम्बन्ध में नहीं जाना चाहता हूँ।

यागों का पुनः से चलन

आधुनिक काल में कुछ काल समाप्त हो गया है जब यागों को पाखण्ड के रूप में समाज ने परणित कर दिया था। परन्तु देखो समय आता रहा काल का काल आता रहा परन्तु देखो याग को पुनः से समाज ने अपनाने का प्रयास किया है। आधुनिक काल में भगवन्! यह जो पृथ्वी मण्डल है, पृथ्वी मण्डल के वैज्ञानिकों का जिस भी काल में कोई समूह एकत्रित होता है उस समय वह एकत्रित होकर यह विचारते हैं कि यह जो प्रदूषण हो रहा है। वायुमण्डल में दुषितपन आ रहा है इसका भी कोई मार्ग है जिससे इसे विशुद्ध किया जाए तो वैज्ञानिकजनों में इस प्रकार धाराएँ जो उत्पन्न हो चुकी है कि **गौ के घृत में ऐसे परमाणु हैं जो वायुमण्डल में अशुद्ध परमाणुओं को निगल करके विशुद्ध परमाणुओं का प्रसार कर सकते हैं।** कोई और साधना नहीं है और कोई ऐसा कृत्य नहीं है। परन्तु देखो! उनके विचारों में परिवर्तन होता रहता है, आज विचार कुछ हैं। जिस विचार का आज

वह खण्डन कर रहे हैं परन्तु कुछ काल में उन्हीं विचारों का मण्डन करने लगते हैं। उसके मूल में क्या है? उसके मूल में यह है कि जो वैज्ञानिक हैं उनका तप महान् नहीं है। वह आत्मतत्व के वेत्ता नहीं हैं क्योंकि जो आत्मवेत्ता पुरुष होते हैं, वह उस विज्ञान में रमण करते हैं तो उसकी घोषणा में अशुद्धपन नहीं आता। परन्तु जब वैज्ञानिकों के आधुनिक काल में जब प्रवेश करता हूँ तो वैज्ञानिकों की धाराएँ उनकी परिवर्तित होती रहती हैं, परिवर्तित क्यों होती रहती हैं? क्योंकि परमात्मा का यह जो जगत् है, विज्ञान है यह बड़ा विशाल है परन्तु विशाल को अविशालता अंकित करना चाहते हैं तो उनके विचारों में अन्तर्द्वन्द आ जाता है।

सार्थक विज्ञान

विचार-विनिमय क्या? मैं वैज्ञानिकों के सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं, विचार मैं देने जा रहा हूँ कि जो आधुनिक काल का वैज्ञानिक है यह मानव को त्रास दे रहा है, वह मानव को त्रास क्यों दे रहा है? क्योंकि उसमें तप नहीं है, आत्मविश्वास नहीं है। यदि आत्मज्ञानी हो तो समाज को त्रास नहीं दिया जा सकता। परन्तु देखो कहीं वैज्ञानिकजन अपनी-अपनी आभा में गति कर रहा है मुझे इससे कोई विवाद नहीं है, मुझे कोई विरोध भी नहीं है। विचार केवल हमारा यह है 'भय ब्रह्मः वाचा', क्योंकि जब विज्ञान में चरित्र की धारा ही नहीं है तो विज्ञान की एक अग्नि काण्ड बन कर रह जाने की सम्भावना बनी रहती है। विचार यह रहता है कि विज्ञान में आध्यात्मिकवाद, परमाणुवाद के मिलान करने में आध्यात्मिकवाद का यदि मिलान हो जाए तो विज्ञान सार्थक बन करके, जनसमूह का प्रिय बन करके यह रूढ़िवाद को समाप्त करके अपनी धाराओं में परणित हो सकता है। यह समाज एक महान् बन सकता है परन्तु आज जो काल चल रहा है यहाँ विज्ञान का दुरुपयोग होता जा रहा है। विज्ञान के दुरुपयोग होने से विज्ञान अपनी चरित्र की सम्पदा नहीं रही है। वह क्यों नहीं

रही क्योंकि इसमें आध्यात्मिकवाद की सूक्ष्मता है और यह अग्नि के मुखारबिन्दु पर विद्यमान हो करके, समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके इस सँसार रूपी समुद्र में न जाने किस समय अग्नि प्रदीप्त हो जाए। ऐसा-ऐसा काल, विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है तो मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से, हे मेरे देव! रावण के काल में भी विज्ञान का दुरुपयोग हुआ था, लङ्का समाप्त हो गई। समाज समाप्त हो गया। इसी विज्ञान का दुरुपयोग महाभारत के काल में हुआ था। महाभारत के काल में एक कुटुम्ब अपने कुटुम्ब में इस विज्ञान के दुरुपयोग से अग्नि प्रदीप्त हो गई और उसका परिणाम क्या था? विज्ञान का दुरुपयोग कर्त्तव्य का पालन नहीं रहा। केवल स्वार्थवाद की प्रथा बन गई। जिस भी काल में राजा व्यवसायी बन जाएगा विज्ञान का दुरुपयोग हो जाएगा। जब राजा निरीक्षण रहेगा, आध्यात्मिकवेत्ता रहेगा, ब्रह्म की उसे पुकार होगी वह राजा इस समाज में निरीक्षण करके व्यवसायी नहीं बन रहा है, वह समाज की रक्षा के लिए लगा हुआ है परन्तु देखो वह राजा पवित्र होता है। उस राजा के राष्ट्र में विज्ञान का दुरुपयोग नहीं होगा। विज्ञान का दुरुपयोग उस राजा के राष्ट्र में होता है जब राजा स्वतः व्यवसायी बन जाता है, व्यवसायी बन करके दूसरे के द्रव्यों को, माताओं के शृंगार को अपने में ग्रहण करने में तत्पर हो जाएगा तो वहाँ विज्ञान का दुरुपयोग हो करके वह काल, वह राजा का राष्ट्र एक समय अग्नि का काण्ड बनकर रह जाएगा।

मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव को यह निर्णय करा रहा हूँ कि आधुनिक जगत् इस प्रकार की प्रतिभा में आ गया है। आज मैं वैज्ञानिकों के प्रति केवल अपनी सहानुभूति केवल इतनी ही है कि प्रभु उन्हें उन्नति देकर के सुबुद्धि देकर के, विज्ञान में यदि आध्यात्मिकवाद आ जाए, मानवीयवाद आ जाए, चरित्रवाद आ जाए तो राष्ट्र और समाज दोनों में पवित्रता आ जाएगी परन्तु मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चाएँ याज्ञम् ब्रह्मा वाचः चर्चा नहीं करना चाहता हूँ।

विचार-विनिमय यह कि हे यजमान! यह काल तो चलता ही रहेगा, परम्परागतों से चल रहा है, कहीं अग्निकाण्ड है तो कहीं शीतल काण्ड है, कहीं कर्त्तव्य का पालन है। यह तो परम्परागतों से ही काल चल रहा है परन्तु देखो! मैं कह रहा हूँ हे यजमान! तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। द्रव्य का जिस गृह में सदुपयोग होता है वह गृह स्वर्ग कहलाता है, वह गृह महान् कहलाता है, मेरे प्यारे! देखो, मेरी आकांक्षा यही बनी रहती है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। उद्गान गाने वाले, उद्गीत गाने वाले उद्गाता, आयुभूषनम् आयु में, ऊर्ध्वा में प्राप्त होते रहें, ऐसी मेरी सदैव कामना रहती है। हे उद्गाता! कहीं वह परमपिता-परमात्मा की यह सृष्टि है वहीं इसमें सूर्य उद्गाता बन रहा है कहीं प्राण उद्गाता बन रहा है कहीं आत्मा उद्गाता बन रहा है, कहीं यहाँ अध्वर्यु भी इसी प्रकार के रूपों में परणित होता रहता है। **मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव आध्यात्मिक चर्चाएँ और भौतिक चर्चाएँ दोनों का समन्वय करना चाहते हैं।** परम्परागतों से ऋषि मुनियों की एक ही धारा रही है कि भौतिक विज्ञान भी पराकाष्ठा पर हो परन्तु उसमें आध्यात्मिकवाद भी अवश्य रहना चाहिए। आध्यात्मिकवाद से ही विज्ञान सार्थक बन सकता है।

नाना प्रकार के याग

आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा क्योंकि मुझे तो इतना वाक्य प्रकट करना है। मैं अपने यजमान को अपने हृदय की सहानूभूति प्रकट करता हूँ। हे यजमान आयुष्मान भव। मैं उस काल में जाना नहीं चाहता हूँ जब महाराज अश्वपति के यहाँ यागों में परणित होते रहते थे। यागों का कर्म कराते रहते थे। नाना प्रकार के याग, पुत्रेष्टि याग, अश्वमेध याग, अजयमेध याग, नरमेध याग, गौकण याग जैसे अस्तम अश्वमेध हो जैसे वृष्टि याग, बाजपेयी याग, इन्द्र याग नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे यहाँ

वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है। **मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव उनकी विवेचना करते रहते हैं, आभा में प्रकट कराते रहते हैं।**

धर्म पद्धति कल्याण का मार्ग

आज तो मैं केवल इतना उच्चारण कराने आया हूँ मेरे हृदय में एक ही विडम्बना रहती है और वह विडम्बना है कि मानव, मानव में स्नेह होना चाहिए। मानव-मानव में प्रीति होनी चाहिए, परमपिता का विशुद्ध रूप समाज में आना चाहिए। रूढ़ियाँ उस राष्ट्र को नष्ट कर रही हैं। आधुनिक काल में प्रत्येक राष्ट्र में क्या समाज रूढ़ियों में परणित हो रहा है। धर्म के मर्म को राजा को जानना चाहिए और धर्म पद्धति को राष्ट्र में लेकर के राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहिए, यह मेरी आकाँक्षा रहती है। यह सदैव विचार रहते हैं मुझे यही पिपासा लगी रहती है। मानव रूढ़िवाद को त्यागने वाला बने। समाज में रूढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिएँ क्योंकि जो राजा होता है रूढ़ियाँ को समाप्त करने वाला उसमें ज्ञान होना चाहिए। विवेक होना चाहिये। ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। ब्रह्मवेत्ता ही रत्नों के मर्म को जानने वाला ही रूढ़ियों को समाप्त कर सकता है और यह रूढ़ियाँ बनी रहेंगी तो राजा के राष्ट्र में कर्त्तव्य का पालन नहीं हो सकता। जब कर्त्तव्य नहीं होगा तो महाअद्धितीयों में अधिकार की पुकार होने लगेगी। अधिकार की पुकार करता-करता प्राणी अपने में नष्ट हो जायेगा। यह मेरा सदैव परम्परागतों का एक वाक्य है पूज्यपाद-गुरुदेव ऐसा भी उच्चारण करते रहते हैं।

आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ मैं सदैव जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है मेरा हृदय प्रसन्न है क्योंकि यज्ञों में द्रव्यों का सदुपयोग होना देवताओं को हवि देना देखो **सूक्ष्म रूप से अग्नि की तरंगों पर विद्यमान होकर के शब्द जाना, शब्द के साथ में मुनिवरो! चित्र जाना वह अन्तरिक्ष में लय हो जाते हैं।** मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव नित्यप्रति वाक्यों की पुनरुक्तियाँ करते रहते हैं, हम कराते रहते हैं। अब मैं पूज्यपाद-गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने उद्‌गार दिये। उनके उद्‌गार बड़े पवित्र और सार्थक होते हैं क्योंकि सत्य उच्चारण करना ही मानव का कर्तव्य कहलाता है। क्योंकि **ऋषि कहते उसे हैं जो अपने वाक्य उद्‌गार हृदय के प्रकट करे।** आज का वाक्य यह क्या कह रहा है कि हम परमपिता-परमात्मा की प्रतिभा और महानूता में रमण करते चले जाएँ। **आध्यात्मिक, भौतिक इन सबका समन्वय करते हुए और द्रव्य को यह विचारते कि यह परमपिता-परमात्मा की एक सम्पदा है इसका सदुपयोग करना हमारा कर्तव्य है।** आत्मा किसी सूत्र में पिरोई हुई है। प्राण सूत्र में इन्द्रियाँ पिरोई हुई हैं जैसा हमने पूर्व उच्चारण किया।

आज जैसा महानन्द जी ने कहा हे यजमान! तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। सदैव मेरी भी यह कामना रहती है। जीवन सदैव आन्नदित होता हुआ इस सँसार की प्रतिभा को जानते हुए अपने में महान् विचित्र बन करके सागर से पार होने का प्रयास ऐसा मेरा भी मन्तव्य रहता है। आज मैं भी महानन्द जी के इन्हीं विचारों की पुनरुक्ति करता हूँ। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 9 मई, 1983

स्थान : श्री देवराज पहूजा
सी-43, साऊथ एक्सटेन्शन-1
नई-दिल्ली

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. यह वह भारत भूमि है जिसमें महान आत्माओं का जन्म हुआ।
2. एकता उसी काल में आ सकेगी जब यहाँ देखो तुम्हारी सँस्कृति एक होगी, भाषा एक होगी।
3. मानव के जो विचार उत्पन्न होते हैं वह धर्म से होते हैं सँस्कृति से होते हैं।
4. सँस्कृति उसी को कहते हैं जहाँ सदाचार और मानवता एक आँगन में निर्णय की जाती है।
5. हमारी सँस्कृति परम्परा से है जो ऋषि-मुनियों की प्रणाली है।
6. जहाँ मानव के विचारों में शुद्ध क्रान्ति, महान क्रान्ति, कर्तव्य पारायणता और एकता होती है वहाँ विजय अवश्य हुआ करती है।
7. परमात्मा सबका रक्षक है परमात्मा ही मनुष्य की रक्षा करता है।
8. स्वार्थ के कारण आर्यो की पद्धति नष्ट होती जा रही है।
9. अवतार उसे कहा करते हैं जो परमात्मा के निकट जाने वाली आत्मा हो।
10. जो वेद कहता है जो दर्शन कहते हैं, उसके ऊपर हमें चलना है यह हमारा सुपथ है।
11. जो मानव परमात्मा से भयभीत होता है वह सँसार में ऋषि बन जाता है।
12. जब तक त्यागी तपस्वी नहीं बनेंगे इस राष्ट्र और समाज का कल्याण कदापि नहीं होगा।
13. बुद्धिमान, सदाचारी और तपस्वी राजा प्रजा को सुख पहुँचा सकता है अन्यथा सुख नहीं पहुँचा सकता।
14. यह मन हमारे आहार और व्यवहारों से उत्पन्न होता है।
15. सोम नाम परमात्मा का है, रस नाम ज्ञान का है।

Creation, and the Institution of National Order

On the way they met Jatayu (a great friend of Dashratha) who had fought bravely against Ravana in order to rescue Sita from his clutches. He was badly injured in the scuffle. Jatayu told them that Ravana had abducted Sita. He advised Rama to meet Sugriva in Kishkindha. On their way to Kishkindha they came across the hermitage of Maharishi Bharadwaj where the sage trained them in the use of nuclear weapons (Agni astra, Brahma-astra, Vayu-astra and Jal-astra). The weapons too were presented to Rama and Lakshmana for use.

Did Kumbhakarna sleep for six months ?

Maharishi Bharadwaj's 'ashram' was the biggest seat of learning scientific and nuclear warfare at that time. At this very 'ashrama' Kumbhakaran used to come and receive training in physical sciences and had set up his own laboratory to produce nuclear arms and other items of invention. For this very reason he used to stay for six months in his own laboratory and the remaining six months (of the year) were spent in his kingdom.

Makardwaj's Birth

O, sages ; when Rama met Hanuman at Kishkindha, Rama was wonderstruck to see Hanuman's life of austerity and renunciation. Many years before this event Hanuman had married Sugriva's daughter named Rohini. After giving birth to a son, she had breathed her last. He proved very great since he remained perfectly celibate for the rest of his life. Hanuman's son, Makardhwaj, fell into Khardushan's hands who was invading southern states. From there he was sent to Patalpuri (Modern America) and became the gatekeeper of Raja Ahiravana (Ravana's son). When Rama vanquished Ahiravana, he discovered that the gatekeeper was Hanuman's son.

Ravana's life sketch and his devotion to Yajna

O, sages ; In the Treta period there was a sage named

Palusht who was the royal priest of Raja Mahidanta. His son was Manichand Brahmana and Manichand's son was Varuna. He had two other sons. When all the three studied at the preceptor's hermitage, they were theists and devout worshippers of God. Varuna was well-versed in Vedic knowledge. He was Aditya Bahmchari (one who remains celibate for 48 years). His father asked him to marry but he declined to do so.

Raja Mahindant was the monarch of almost the whole world. Patalpuri formed a part of his realm. Rohini kingdom was under his sway, Gandhar and other states owed their allegiance to him. Ceylon was his capital. Once Raja Kuber invaded Ceylon and conquered it. Kuber conquered Patalpuri, and Bhatal Raja conquered Somdit. Raja Mahidant had a daughter but no son. Her name was Mondodri, she had studied the Vedas at Tatav Muni's ashram. She was a great scholar. Raja Mahidant went to the preceptor's ashram and said, "you are my daughter's preceptor. What are her virtues and in which 'Varan' she should be married". The preceptor told him that she possessed the virtues of a Brahman and as such she should be married in a Brahman family. Raja Mahidant was reminded of Varuna, the well known celibate, the grandson of sage Palusht. When Varun learnt about the girls's quality, he showed his willingness and married her. At the time of departure Raja Mahidant regretted that he had nothing to offer (as present). His kingdom had been usurped by Kuber. At this Varuna pledged to take his wife only after he had redeemed his inlaw's territory from Raja Kuber. Varun was Brahman. He toured many countries and secured help from other rulers, invaded Raja Kuber and conquered Lanka (Ceylon). After the conquest he came to Raja Mahidant and said, "Sir, here is your kingdom. Please accept it". Raja Mahidant said, "I present the kingdom to you. It is yours because you are my only heir and, moreover, I could not give you anything at the time of marriage.

Ravana's Coronation

O, Sages ! At Mahidant's suggestion, sages and sovereigns

held a meeting to assign a new name to the emperor of Lanka. Maharishi Kukut Muni was called upon to preside over the ceremony on Palusht Rishi's proposal. But he declined the offer contending that Varun did not deserve to be the ruler because he could foresee that, on becoming a ruler, Varun would go astray and lead to the wreck and ruin of his kingdom. So saying the sage left the meeting. At Mahidant's request Palusht rishi performed the coronation ceremony and named him 'Ravana'. 'Ravana' literally meant an eminent hero and a broad-minded person. He was a great worshipper of God, but, on becoming a ruler, he began to imbibe many vices. He was a great warrior. He subjugated many other countries. His son, Ahiravana, ruled over Patalpuri (modern America). Narayantak, Ravana's son, a great scientist, ruled over Sudir Kingdom (Modern Russia). Akshay Kumar ruled over Rohin Kingdom (Modern China). Meghnath was the ruler of Gandhar and other states.

Advancement of science in Ravana's reign

Raja Ravana was an eminent scientist. At one time when he was present in his court, he felt mentally perturbed and expressed his desire to go to the forest to be soothed by some holy person. He left his kingdom and met Maharishi Kukut Muni in the forest. He expressed a keen desire that Kukut Muni visits Lanka. The Muni observed, "Your kingdom is really very wonderful and I have already learnt about the advance you have made in scientific knowledge, but it matters little to me, I have no desire to visit your kingdom." Nevertheless, at Ravana's persistant request, the Muni agreed to visit Lanka. Raja Ravana and the Muni, on reaching Lanka, were accorded a warm reception. Maharani Mandodri touched the sage's feet and beseeched him to give some spiritual advice to Ravana before departure.

Maharishi Kukut Muni first visited the royal palace which was built by Raja Kuber who ruled the kingdom before Ravana. Before Kuber Raja Mahidant ruled it. He was preceded by Raja Shiva. Prior to Shiva, Bikram was its king, Bikram's predecessors were Somini, Dalava, Shanbilya, Surya

and so on. This all is just by the way, Next Kukut Muni visited the queen's mansion built by Raja Shiva. On seeing this the Muni was highly pleased. After visiting numerous royal buildings the rishi was led to special laboratories connected with researches on earth, air, water and fire elements. Here atomic bodies were potentised with 'Dwe and Trisainu' 'Chatursainu', 'Panchsainu' (These all are very subtle forms of elements) and those led to the development of different weapons of war (i.e. Brahm-astra, agni-astra, Jalastra etc). Lastly Ravana conducted him to some more special laboratories of Ravana's son, Nariayantak who was the greatest scientist of the age and who frequently visited the Moon in his 'Bhautik yan' (Plane) Mars was also visited during Ravana's reign. Finally Ravana conducted the Muni to Medical research centre, where Ashwani Kumar resided. He was an authority on surgery who could join two parts of the skull and, stopping the heart beat, could operate upon the heart. The Rishi, on seeing these laboratories, highly praised them. Ravana was very pleased to hear that and asked as to how the Muni liked his kingdom (on the whole). The Rishi replied that Ravana's kingdom was very much advanced in physical sciences but added that after some time the kingdom would go to wreck and ruin. Ravana exclaimed as to how it could be possible. The Rishi said that, no doubt, there were lofty palaces, several laboratories and much material equipment but he could not trace a 'Charitra-shala' (character building institution). A kingdom without a 'Charitrashala' was sure to go to dogs sooner or later. When Ravana heard these words, he said, "It is true that there is no Charitrashala in my kingdom." The Rishi said that for that very reason he had declined to perform his coronation because he was not worthy to become a great ruler. After the Coronation, material progress was sure to be made but it would lack in spiritual advacement. Lofty mansions did not matter and nothing could be achieved by going to the Moon, and laboratories were useless if character building was neglected. He predicted that a man of high character would come and destroy his kingdom.

Pujyapad Gurudev

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

वैदिक कुमार

श्रीमति पूनम त्यागी व श्री संजीव त्यागी जी निवास स्थान बल्लभगढ़, हरियाणा (मूल निवासी ग्राम दिनकपुर, जिला मुजफ्फरनगर) ने अपने सुपुत्र चिरन्जीव वैदिक कुमार के शुभ जन्मदिवस 8 मई 2016 के आगमन पर 5100 रु. का सात्विक सहयोग समिति को पुस्तक प्रकाशित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है। श्री त्यागी जी समिति के प्रकाशन के कार्य में काफी लम्बे समय से सहयोग निरन्तर बनाए हुए हैं और प्रतिमाह एक हजार की राशि 'मासिक सहयोग' के रूप में प्रकाशन के लिए प्रदान कर रहे हैं। जिसके लिए समिति हृदय से बारम्बार आभार प्रकट करती है।

अपने माता-पिता जी की छत्रछायाा से ही श्री त्यागी जी पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के ज्ञान से जुड़ गए थे क्योंकि इस याज्ञिक परिवार ने पूज्यपाद गुरुदेव की अनुपम कृपा का शुभ लाभ उनके द्वारा यज्ञों व प्रवचनों के माध्यम से अनेक बार उठाने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसी धारा को निरन्तर जागृत रखते हुए अपने सेवाकाल को भी बड़ी निष्ठा व कर्मठता से करते हुए लाक्षागृह बरनावा में आयोजित यज्ञों में अनेक बार पति-पत्नि यजमान बनकर और साहित्य का निरन्तर अध्ययन करते हुए अपने को परिवार सहित ऊर्ध्वा गति प्रदान करने में सँलग्न हैं।

समिति त्यागी जी के सौभाग्यशाली पुत्र प्रिय वैदिक कुमार को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए इन्जीनियरिंग कोर्स को दक्षता से पूर्ण करने के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है और समस्त परिवार का प्रकाशन सहायता के लिए पुनः से आभार प्रकट करते हुए सुख, शान्ति, दीर्घ आयु व सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 01234–240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

ब्रह्म की चेतना ही सँसार में अपना कार्य कर रही है। ब्रह्मविद्या ही मानव को ऊँचा बनाती है, और राष्ट्र में धर्म को ला देती है। इसलिए आज हमें ब्रह्मविद्या की आवश्यकता है। जब प्रत्येक मानव धर्मनिष्ठ और ब्रह्मनिष्ठ होता है तो उसी काल में उसकी विचारधारा में एक महानता का दिग्दर्शन और उसके हृदय में महानता की प्रतिष्ठा हो जाती है। जिससे वह महान् कहलाता है। मानव की जो वाणी होती है उसका सम्बन्ध अग्नि से होता है। इसलिए हमारे यहाँ किसी-किसी ऋषि ने अग्नि को भी उद्‌गाता कहा है। आज जो हम प्रभु की याचना कर रहे हैं। हे प्रभु! तू स्वयं यज्ञ है। तेरी महानता इन वेदों में परिणत हो रही है। वेद की जो अनुपम धारा है वही प्रकाश, मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाता है। क्योंकि वेद की जो अनुपमता है, ब्रह्मविद्या है, महानता है, उसमें उसका एक-एक शब्द पक्षपात से रहित है। उसी को तो ब्रह्मविद्या कहते हैं। क्योंकि परमात्मा में रूढ़ि नहीं होती, इसलिए वेद में भी रूढ़ि नहीं है। इसलिए वेद के अनुसार मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए। जो मानव रूढ़ियों में परणित हो जाते हैं, उनके जीवन में विनाश हो जाता है। उनका जो मानसिक सँकल्प होता है, उसकी धाराओं में भिन्नता आ जाती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव